विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

www.vishwahindi.com

वर्ष: 8 अंक: 30 जून, 2015

अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

3-5 अप्रैल, 2015 को न्यू जर्सी के रटगर्स विश्वविद्यालय में द्वितीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर अमेरिका, कनाडा, भारत और अन्य देशों के कई विद्वान उपस्थित थे। सम्मेलन विश्व में हिंदी के पठन-पाठन का सिलसिला तीव्र गति से आगे बढ़ाने और प्रवासी समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक जीवन में हिंदी का उपयोग बढ़ाने में प्रयत्नशील रहा।

शेष पृ. 2

भारत व जर्मनी ने एक दूसरे के भाषा-शिक्षण को किया प्रोत्साहित

12 अप्रैल को हनोवर, जर्मनी में आयोजित इंडस्ट्रियल फ़ेयर के उद्घाटन समारोह में भारत के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा जर्मन चांसलर आंजेला मेर्केल की उपस्थिति में एक दूसरे की भाषाओं के शिक्षण संबंधी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। जर्मनी के स्कूलों में हिंदी पढ़ाए जाने का तथा भारत के केंद्रीय विद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में जर्मन भाषा की पढ़ाई फिर से शुरू किए जाने की चर्चा की गई।

शेष पृ. 2

कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल को निराला स्मृति सम्मान

निराला साहित्य संस्थान, इलाहबाद द्वारा महाकवि निराला की रॉयल्टी की राशि से दिया जाने वाला निराला स्मृति सम्मान इस वर्ष प्रख्यात कथाकार चित्रा मुद्गल को इलाहबाद में निराला जी के जन्म-दिवस के अवसर पर प्रदान किया गया।

शेष पृ. 4

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस का स्थापना दिवस

13 जून, 2015 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस मनाया गया। अवसर पर छात्रों के लिए एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन भी किया गया जिसका मूल विषय देश के विख्यात साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत पर केंद्रित रहा। अंत में इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से 'साहित्य संवाद गोष्ठी' के अंतर्गत हिंदी भवन में कवि सम्मेलन भी हुआ।

शेष पृ. 3

तेल-अवीव, इज़राइल में हिंदी दिवस

14 जून, 2015 को तेल-अवीव, इज़राइल के दूतावास व पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, तेल-अवीव विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया गया। अवसर पर राजदूत महामहिम जयदीप सरकार ने समारोह का उद्घाटन किया।

शेष पृ. 5

आगे पढ़ें :

- मॉरीशस में राष्ट्रीय हिंदी नाट्य समारोह 2015 — पृ. 3
- युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह — पृ. 4
- डरबन में उम्हलंगा हिंदी विद्या सभा की 14वीं वर्षगांठ व वार्षिक पुरस्कार दिवस — पृ. 7
- हिंदी व्याकरण जाँचक का प्रदर्शन — पृ. 8
- ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश में शामिल हुए हिंदी के शब्द — पृ. 10

ISSN 1694-2485

भारत व जर्मनी ने एक दूसरे के भाषा शिक्षण को किया प्रोत्साहित

भारत के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा जर्मन चांसलर आंजेला मेर्केल

12 अप्रैल को हनोवर, जर्मनी में आयोजित इंडस्ट्रियल फ़ेयर के उद्‌घाटन समारोह पर भारत के प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा जर्मन चांसलर आंजेला मेर्केल की उपस्थिति में एक दूसरे की भाषाओं के शिक्षण संबंधी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। जर्मनी के स्कूलों में हिंदी पढ़ाए जाने का तथा भारत के केंद्रीय विद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में जर्मन भाषा की पढ़ाई फिर से शुरू किए जाने की चर्चा की गई।

प्रधान मंत्री महामहिम श्री नरेंद्र मोदी तथा जर्मन चांसलर आंजेला मेर्केल ने संयुक्त रूप से कहा कि युवाओं के बीच दोनों देशों की भाषाओं को व्यापक बनाने के लिए दोनों देशों की राष्ट्रीय नीति के अनुरूप संबद्ध प्रयासों और कार्यक्रमों का समर्थन किया जाएगा।

साभार : दी न्यू इंडियन एक्सप्रेस

जर्मनी में संस्कृत अध्ययन की माँग बढ़ी : 14 विश्वविद्यालयों में शिक्षण जारी

जर्मनी का संस्कृत के साथ अत्यंत ऐतिहासिक व घनिष्ठ संबंध है। यह संबंध वर्तमान और भविष्य में और भी मज़बूत होता हुआ दिख रहा है। जर्मनी के विश्वविद्यालयों में संस्कृत अध्ययन के इच्छुक छात्रों की माँग लगातार बढ़ रही है और इसको देखते हुए हैडल्बर्ग विश्वविद्यालय के दक्षिण पूर्वी एशिया केंद्र को स्विट्ज़रलैंड, इटली और यहाँ तक कि भारत में भी 'स्पोकन संस्कृत' की कक्षाएँ प्रारंभ करनी पड़ी है। विश्वविद्यालय में भारतविद्या केंद्र के अध्यक्ष प्रो. अक्सैल मिकाएल्स के शब्दों में जब 15 वर्ष पूर्व यह पाठ्यक्रम आरंभ किया गया था तो उम्मीद थी कि इसे साल-दो-साल में बंद करना पड़ेगा। उलटे आज हमें शिक्षकों की संख्या बढ़ानी पड़ी और कार्यक्रम को अन्य यूरोपीय देशों तक लेकर जाना पड़ा।

हैडल्बर्ग में एक महीने तक चलने वाली बोलचाल की संस्कृत की कक्षाओं के लिए दुनिया भर से आवेदन आते हैं और अभी तक 34 देशों से 254 छात्रों ने इसमें भाग लिया है। डॉ. मिकाएल्स और उनके अनेक छात्रों के अनुसार धर्म के अतिरिक्त पूर्वी दर्शन, इतिहास, संस्कृति से लेकर नृविज्ञान, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और सायकोएनालिज़िस तक जैसे विषयों की बेहतर समझ के लिए संस्कृत ग्रंथों की समझ और उनका अध्ययन महत्वपूर्ण है और स्वाभाविक रूप से इसके लिए भाषा का ज्ञान पहला चरण है। कंप्यूटर भाषाविज्ञान के क्षेत्र में संस्कृत का महत्व भी सर्वमान्य होता जा रहा है।

प्रो. अक्सैल मिकाएल्स, अध्यक्ष, भारतविद्या केंद्र, हैडल्बर्ग विश्वविद्यालय

जर्मनी के विश्वविद्यालय संस्कृत अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है तथा विश्व के लगभग सभी बड़े अध्ययन केंद्रों में भी जर्मनी के संस्कृत विद्वान कार्यरत हैं। प्रो. मिकाएल्स के अनुसार इस बात का एक तुलनात्मक प्रमाण यह है कि यू.के. के चार बड़े विश्वविद्यालयों में संस्कृत का शिक्षण होता है जबकि जर्मनी में यह संख्या 14 है।

साभार : मेल ऑनलाइन इंडिया

अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन

डॉ. सुरेंद्र गंभीर

3-5 अप्रैल, 2015 को न्यू जर्सी के रटगर्स विश्वविद्यालय में द्वितीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर अमेरिका, कनाडा, भारत और अन्य देशों के कई विद्वान उपस्थित थे। यह सम्मेलन विश्व में हिंदी के पठन-पाठन का सिलसिला तीव्र गति से आगे बढ़ाने और प्रवासी समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक जीवन में हिंदी का उपयोग बढ़ाने में प्रयत्नशील रहा।

सम्मेलन के दौरान सभी प्रतिभागियों ने तकनीकी, वैज्ञानिक और उच्च शिक्षा में हिंदी का प्रयोग और चुनौतियों पर गहन चर्चा के अतिरिक्त उद्योग, व्यवसाय-वाणिज्य उद्यमियों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराने के उद्देश्य से त्वरित पाठ्यक्रम की रचना जैसे मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया गया। सम्मेलन का लक्ष्य प्रवासी समाज की नई पीढ़ी के लिए सामयिक शिक्षा सामग्री का भंडार तैयार करना था जिसके लिए भारत सरकार और भारत में कार्यरत शिक्षा संस्थानों का सहयोग आवश्यक था। दिल्ली विश्वविद्यालय से पधारे हिंदी विद्वानों और विशेषज्ञों के साथ मिलकर इस लक्ष्य को पूरा करने का प्रयत्न किया गया। इस अवसर पर सभी को संबोधित करते हुए श्री अशोक ओझा ने कहा कि हिंदी को आगे बढ़ाने की दिशा में यह सम्मेलन वार्षिक गतिविधि का स्वरूप ले रहा है। इसकी संरचना अपने आप में एक अभिनव प्रयोग है जिसमें शिक्षाविद और प्राध्यापकों के अतिरिक्त सरकारी तंत्र, व्यापार-वाणिज्य आदि क्षेत्रों में कार्यरत लोग एक साथ एकत्र होकर इक्कीसवीं सदी और उसके आगे भी हिंदी को विश्व की समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए कार्य कर सकते हैं। यह दृष्टि हिंदी शिक्षा के लिए संसाधन-सामग्री का भंडार खड़ा करने के साथ-साथ हिंदी कर्मियों के लिए बहुआयामी अवसर प्रदान करने में सक्षम है।

श्री अशोक ओझा

सम्मेलन के प्रमुख सत्र में दुनिया भर में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए अमेरिका में एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी केंद्र की स्थापना का फैसला लिया गया जिसके समर्थन में 2014 के न्यू यॉर्क सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ था। यह केंद्र भारतीय और अमेरिकी विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों के बीच सेतु का भी काम करेगा। 'विश्व में हिंदी का बढ़ता दायरा : संभावनाएँ और चुनौतियाँ' नाम से आयोजित कार्यक्रम में निजी सरकारी स्तर पर हिंदी भाषा और साहित्य की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयास करने की ज़रूरत को भी रेखांकित किया गया। सम्मेलन की रूपरेखा तैयार करने में न्यू यॉर्क विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका प्रो. गाब्रिएला निक इलिएवा से महत्वपूर्ण सलाह और सहयोग तथा श्री सुरेन्द्र गंभीर और विजय गंभीर का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

सम्मेलन के प्रतिभागी

साभार : अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन, रटगर्स, न्यू जर्सी वेबसाइट

हिंदी प्रचारिणी सभा, मॉरीशस का स्थापना दिवस

सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन (गिरधारी भगत) की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पण करते हुए सभा के प्रधान, सदस्य व छात्र

13 जून, 2015 को हिंदी भवन, लोंग माउंटेन, मॉरीशस में हिंदी प्रचारिणी सभा का स्थापना दिवस मनाया गया। अवसर पर भारतीय उच्चायोग मॉरीशस की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडेय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ने समारोह की अध्यक्षता की। अन्य गणमान्य अतिथियों में विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल, भोजपुरी संगठन की अध्यक्षा डॉ. सरिता बुधु, हिंदी संगठन की मंत्री श्रीमती अंजू घरभरन तथा अन्य कई महानुभावों ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

डॉ. श्रीमती नूतन पांडेय, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस

प्रतिवर्ष की तरह हिंदी भवन विद्यालय के छात्रों के लिए एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसका मूल विषय देश के विख्यात साहित्यकार श्री अभिमन्यु अनत पर केंद्रित रहा। साहित्य गोष्ठी से पूर्व छात्रों ने सभा के मुख्य दाता श्री रामदास रामलखन (गिरधारी भगत) की प्रतिमा को पुष्पमाला अर्पित की तथा इसके पश्चात अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अन्त में देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर ने विशेष वक्ता के रूप में अपने विचार प्रकट किए जिससे छात्र लाभांवित हुए।

श्री इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, वरिष्ठ साहित्यकार व मान्य प्रधान, हिंदी लेखक संघ

इसके पश्चात इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से 'साहित्य संवाद गोष्ठी' के अंतर्गत हिंदी भवन में कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन भी हुआ जिसमें देश के स्थापित वरिष्ठ कवियों के साथ-साथ नवोदित कवियों ने भी भाग लिया। डॉ. हेमराज सुन्दर ने मंच का संचालन किया। समारोह के अंत में सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने उपस्थित अतिथियों, साहित्यकारों तथा हिंदी प्रेमियों को कवि सम्मेलन की सफ़लता पर आभार प्रकट किया।

श्री यंतुदेव बुधु की रिपोर्ट

मॉरीशस में राष्ट्रीय हिंदी नाट्य समारोह 2015

अप्रैल-मई महीने में मॉरीशस में कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय हिंदी नाट्य समारोह 2015 का आयोजन किया गया। प्रति वर्ष कला एवं संस्कृति मंत्रालय द्वारा नाट्य समारोह अप्रैल महीने से अक्टूबर महीने तक चलता है। इस वर्ष नाटक प्रतियोगिता के प्रेलिमिनेरिज़ 20 अप्रैल से 11 मई तक चले।

20 मई को हिंदी नाटक समारोह का फ़ाइनल वाक्वा के सेर्ज़ कोंस्ताँतें थिएटर में हुआ। अवसर पर देश के विभिन्न महानुभाव जैसे कला एवं संस्कृति मंत्री, माननीय संताराम बाबू, भूतपूर्व मंत्री श्री धरम गोकुल, श्री अरमुगम परशुरामन, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल आदि उपस्थित थे।

फ़ाइनल में तीन श्रेष्ठ नाटक - नाट्यदीप आर्ट्स द्वारा 'हज़ारों ख्वाइशें ऐसी', यूनिवर्सल कॉलेज द्वारा 'एक भूल' तथा त्रिनेत्र आर्ट्स द्वारा 'अदला-बदली' को पुरस्कृत किया गया। सभी प्रतिभागियों को 6000 रुपए नकद पुरस्कार दिए गए साथ ही साथ हिंदी संगठन (Hindi Speaking Union) द्वारा पुस्तकें प्रदान की गईं। इसके अतिरिक्त विजेताओं को शील्ड तथा श्री राजेंद्र प्रसाद सादासिंह द्वारा लिखित नई नाट्य पुस्तक 'सिर उठा के जियो' की एक प्रति दी गई। डॉ. अलका धनपत, श्री राजेंद्र प्रसाद सादासिंह तथा श्री यशदेव रंजीत निर्णायक मंडल के सदस्य रहे।

इस साल हिंदी नाटक समारोह का आयोजन प्रान्तीय स्तर पर किया गया। इस परियोजना के पीछे मंत्रालय का उद्देश्य था कि रंगमंच को दर्शकों की ओर ले जाया जाए तथा प्रतिभागी कलाकारों के माता-पिता, सगे-संबंधी, हित-मित्र भी नाटकों का मंचन देख पाएँ व अधिकतर लोगों को रंगमंच की ओर आकर्षित किया जा सके। इस साल हिंदी नाटक प्रतियोगिता में प्रतिभागियों की संख्या में वृद्धि आई। इस वर्ष प्रतियोगिता के लिए 34 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं, 29 मंचन हुए, 1 प्राथमिक पाठशाला, 15 कॉलेज, 14 क्लब ने प्रतिभागिता दी तथा 26 स्थानीय नाटक प्रस्तुत किए गए।

कला एवं संस्कृति मंत्रालय का अपना एक विशेष विभाग है- 'ड्रामा सेक्शन' (Drama Section) जिसके अंतर्गत जितने भी अफ़सर हैं वे नाट्य क्षेत्र में विशेषज्ञ हैं और पूर्वी भाषाओं का अच्छा ज्ञान रखते हैं। यह विभाग विशेष रूप से नाट्य संबंधी कार्यशालाओं, मंचन प्रतियोगिताओं, नाटक लेखन प्रतियोगिताओं का भार संभालता है। नाट्य समारोह का आयोजन राष्ट्रीय स्तर पर दस भाषाओं में होता है : अंग्रेज़ी, फ्रेंच, हिंदी, भोजपुरी, तेलुगु, तमिल, मराठी, उर्दू, मंदारिन तथा क्रियोली। क्रमश: एक-एक भाषा को लेकर नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है तथा इस समारोह के दौरान देश भर के तथा हर आयु के कलाकार स्वतंत्र रूप से किसी भी भाषा में नाटक का मंचन कर सकते हैं।

मॉरीशस में हिंदी नाटक और रंगमंच एक नया रूप ले रहा है जिससे वे न केवल मनोरंजन के साधन अपितु ज्ञान तथा शिक्षा के सोद्देश्य माध्यम बनकर उभर रहे हैं। नाटक साहित्य का एक अंग है और मॉरीशसीय हिंदी साहित्य में नाटक बड़े जोश के साथ प्रफुल्लित हो रहा है। नाटक और रंगमंच दर्शकों की ज़रूरत है और सरकार रंगमंच को गाँव-गाँव ले जाकर नाटक प्रेमियों को आकर्षित करने में लगी हुई है। हमारा उद्देश्य यह है कि भाषा के माध्यम से कला तथा संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास किया जाए।

श्री राकेश श्रीकिसुन की रिपोर्ट
कला अधिकारी, कला एवं संस्कृति मंत्रालय

कथाकार श्रीमती चित्रा मुद्गल को निराला स्मृति सम्मान

निराला साहित्य संस्थान, इलाहबाद द्वारा महाकवि निराला की रॉयल्टी की राशि से दिया जाने वाला निराला स्मृति सम्मान इस वर्ष प्रख्यात कथाकार चित्रा मुद्गल को इलाहबाद में निराला जी के जन्म-दिवस के अवसर पर प्रदान किया गया।

इस अवसर पर सम्मानित कथाकार चित्रा मुद्गल ने अपने जीवन-संघर्ष की संक्षिप्त झाँकी प्रस्तुत करते हुए कहा कि ***'निराला स्मृति सम्मान' मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ सम्मान है। इसके बाद मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। यह सम्मान नहीं बल्कि ज़िम्मेदारी है दुनिया को और बेहतर बनाने के लिए सोद्देश्य और सार्थक लिखने की ज़िम्मेदारी। निराला जी को याद करने का अर्थ है रचना और आचरण की एकता। लेखक का दायित्व केवल लिखना नहीं बल्कि निषेधों से लड़ना सिखाने वाले कृतित्व का निर्माण करना भी है। सुविधाओं की कामना से ऊपर समाज हित में किए गए कर्म और ईमान की ज़िन्दगी ही लेखक को सम्मान दिलाती है।***

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कलाकार दूधनाथ सिंह ने कहा कि चित्रा मुद्गल का जीवन प्रगाढ़ दुख और दुश्वार संघर्ष से निरंतर जूझने की संगीतमयी कथा है। उन्होंने निराला की एक कविता के माध्यम से चित्रा जी के जीवन को चित्रित करते हुए उन्हें 'दुख की धूसर संध्या' को हमेशा नए विचारों से गौरवान्वित करने वाली लेखिका बताया। उन्होंने चित्रा जी के उपन्यास 'आवां' को एक प्रतीक बताते हुए इसके कथानक के भीतर व्याप्त 'स्त्री के करुण

श्रीमती चित्रा मुद्गल को सम्मानित करते हुए श्री दूधनाथ सिंह व प्रो. राजेंद्र कुमार

ट्रैजिक संगीत' को रेखांकित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सम्मान के निर्णायक मंडल के अध्यक्ष प्रो. राजेंद्र कुमार ने कहा कि निराला के 'कुल्ली भाट' की तरह चित्रा जी के लेखन में चरित से अधिक जीवन है। कार्यक्रम के आरंभ में सम्मानित रचनाकार पर वक्तव्य देते हुए कथाकार अनिता गोपेश ने चित्रा मुद्गल को स्त्री-विमर्श के संतुलित स्वर की लेखिका बताते हुए कहा कि इनका स्त्री सरोकार वृहत्तर सामाजिक सरोकार का ही एक हिस्सा है।

इस सम्मान के तहत सम्मानित रचनाकार को इक्कीस हज़ार रुपए की धनराशि, मान-पत्र, स्मृति-चिन्ह, अंगवस्त्र और राजकमल प्रकाशन की ओर से 'निराला रचनावली' का एक सेट प्रदान किया गया।

इस कार्यक्रम के दूसरे सत्र में कवि कुमार अम्बुज का एकल काव्य-पाठ हुआ जिसमें उन्होंने अपने पाँचों कविता-संग्रहों से चुनी हुई लगभग पच्चीस कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन सूर्य नारायण ने तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्थान के महासचिव और निराला जी के पौत्र डॉ. अमरेश त्रिपाठी ने किया।

विवेक निराला की रिपोर्ट

यू.एस.ए. में युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह

हिंदी यू.एस.ए. के युवा कार्यकर्ता

28 मार्च, 2015 को पिस्कैटवे नगर, यू.एस.ए. में हिंदी यू.एस.ए. स्वयंसेवी संस्था द्वारा युवा कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करने हेतु युवा स्वयंसेवक सम्मान समारोह का आयोजन लिया गया। समारोह में 39 स्वयंसेवकों, कुछ पाठशाला संचालकों एवं अभिभावकों ने भाग किया। हिंदी यू.एस.ए. के पाठ्यक्रम, पुस्तकों तथा परीक्षाओं की सहायता से पाठशालाओं में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है। हिंदी यू.एस.ए. के संस्थापक श्री देवेंद्र सिंह ने इस सफ़लता को देखकर सभा को संबोधित करते हुए कहा 'आज से 14 वर्ष पहले उन्होंने जो स्वप्न देखा था वह सत्य होता प्रतीत हो रहा है।' कार्यक्रम का संचालन एडिसन हिंदी पाठशाला के संचालक श्री माणक काबरा ने किया।

श्री देवेंद्र सिंह की रिपोर्ट

हिंदी के विस्तार हेतु अन्य भाषाओं का उपयोग ज़रूरी

25 जून, 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने विश्वविद्यालय में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छमाही बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि "हिंदी को अधिक विस्तार देने के लिए सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग करना चाहिए और ऐसा करने से भाषा समृद्ध होगी।" बैठक भाषा विद्यापीठ के सभागार में आयोजित की गई थी। बैठक में पिछली बैठक के कार्यवृत्त, हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिंदी में कार्य, यूनिकोड का प्रशिक्षण, पत्राचार में हिंदी का प्रयोग आदि विषयों पर चर्चा की गयी। अपने संबोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि "हिंदी का मानक स्वरूप अपनाकर उसका कामकाज में प्रयोग करना चाहिए तथा हिंदी के लिए अन्य भाषाओं के दरवाज़े खोलने से ही हिंदी का और विस्तार हो सकेगा और इससे हिंदी देश की संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो सकेगी।" प्रारंभ में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सचिव राजेश यादव ने बैठक की प्रस्तावना रखी तथा अंत में सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

तेल-अवीव, इज़राइल में हिंदी दिवस

14 जून, 2015 को तेल-अवीव, इज़राइल के दूतावास व पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, तेल-अवीव विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से विश्वविद्यालय में हिंदी दिवस का भव्य आयोजन किया। अवसर पर राजदूत महामहिम जयदीप सरकार ने समारोह का उद्घाटन किया। विश्वविद्यालय के हिंदी विद्यार्थियों ने शेक्सपियर के 'हैमलेट' के एक दृश्य का मंचन किया तथा हिंदी में अन्य प्रस्तुतियों के साथ-साथ हिंदी में खेल प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। साथ ही विभाग की एक छात्रा द्वारा भरतनाट्यम नृत्य प्रस्तुति हुई। हिंदी दिवस के इस भव्य आयोजन में लगभग 150 लोगों ने रुचि के साथ भाग लिया।

साभार : भारतीय दूतावास, तेल-अवीव फ़ेसबुक पृष्ठ

दुबई में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समारोह एवं संगोष्ठी

5-9 जून, 2015 को दुबई ग्राण्ड होटल, दुबई के 'सरस्वती' सभागार में अंतरराष्ट्रीय साहित्य कला मंच, मुरादाबाद (उ.प्र.) भारत द्वारा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी समारोह एवं संगोष्ठी -'विश्व पटल पर हिंदी' का आयोजन किया गया। समारोह में भारत से 70 से अधिक शिक्षाविदों, आचार्यों, प्राचार्यों और साहित्यकारों ने भाग लिया और 50 से अधिक शोधालेख प्रस्तुत किए गए। भारत के अतिरिक्त अमेरिका, इंग्लैण्ड, नॉर्वे, नेपाल, मॉरीशस आदि देशों के हिंदी-प्रतिनिधियों एवं साहित्यकारों ने भी संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के उद्घाटन-सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्राण जग्गी उपस्थित थे। आपने साहित्य कला मंच परिवार के इस आयोजन के लिए प्रशंसा की और शुभकामनाएँ दीं। अवसर पर 'विश्व पटल पर हिंदी' शीर्षक से प्रकाशित-संपादित विशाल ग्रंथ का लोकार्पण किया गया। 'विश्व पटल पर हिंदी' का संपादन डॉ. महेश 'दिवाकर', डॉ. मीना कौल तथा डॉ. ऋषिकांत मिसाल द्वारा किया गया है।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र ***में भारत के वैश्विक संबंधों के उन्नयन एवं संवर्धन में हिंदी भाषा की प्रासंगिकता एवं महत्ता, विश्व पटल पर हिंदी की दशा, दिशा एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व तथा हिंदी की भावी विश्व के निर्माण में बहुआयामी भूमिका, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की महत्ता और उसके स्वरूप*** आदि विषयों पर बीज वक्तव्य हुए तथा विद्वानों द्वारा शोधालेख प्रस्तुत किए गए। द्वितीय सत्र भारतवर्ष के 30वें वार्षिक सम्मान-समारोह 2015 पर केंद्रित रहा जिसमें डॉ. त्रिलोकीनाथ सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सम्मान श्रृंखला के अंतर्गत 70 साहित्यकारों एवं हिंदी सेवियों को सम्मानित किया गया। तृतीय सत्र का शुभारंभ 'काव्य गोष्ठी' के रूप में हुआ जिसमें कवियों ने काव्य पाठ किया। डॉ. महेश 'दिवाकर' के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संगोष्ठी का समापन हुआ।

महेश चन्द्र की रिपोर्ट

चंबा में चमेरा-दो पावर स्टेशन करियां द्वारा हिंदी कार्यशाला

26 मई, 2015 को एनएचपीसी चमेरा पावर स्टेशन-दो करियां, चंबा, भारत में एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ चमेरा चरण-दो के मुख्य अभियंता-प्रभारी श्री बिक्रम सिंह द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। श्री बिक्रम सिंह ने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार में हिंदी कार्यशालाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है तथा उन्होंने सभी को हिंदी में कार्य करने की सलाह दी ताकि हिंदी के कार्यों में प्रगति हो। कार्यशाला में चमेरा पावर स्टेशन-दो करियां के विभिन्न कर्मचारियों एवं समन्वयक अधिकारी ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला में हिंदी अनुवादक सुश्री कनिका शर्मा ने हिंदी प्रोत्साहन योजना का विश्लेषण, हिंदी नोटिंग के प्रकार व महत्व, तिमाही रिपोर्ट व अधिनियमों की जानकारी दी। साथ ही आपने यह भी बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य कार्मिकों में प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के ज़रिए राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा हिंदी में कार्य करने में आ रही समस्याओं का समाधान करना है।

साभार: जागरण.कॉम

सिंगापुर में अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा द्वारा 'तृतीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी'

30 मई से 1 जून, 2015 तक मलेशिया व सिंगापुर में अभ्युदय बहुउद्देशीय संस्था, वर्धा द्वारा सिंगापुर के पार्क रॉयल होटल के सभागार में 'तृतीय अंतरराष्ट्रीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता सिंगापुर में भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव श्री रमेश चतुर्वेदी तथा ख्याति प्राप्त लेखक, साहित्यकार व छत्तीसगढ़ मित्र नामक पत्रिका के संपादक डॉ. सुशील कुमार त्रिवेदी ने की। इसमें भारत के अलग-अलग राज्यों के विश्वविद्यालयों के हिंदी प्रमुख, पत्रकारों, समाज सेवियों, हिंदी विद्वानों व साहित्यकारों समेत सिंगापुर के हिंदी प्रेमियों ने भाग लिया। यह तीन दिवसीय सम्मेलन हिंदी को वैश्विक भाषा बनाने, उसकी पहुँच सब तक बरकरार रखने और देश-विदेश में हिंदी पर हो रहे कार्यों पर केंद्रित रहा। इस संगोष्ठी का एक प्रमुख उद्देश्य गैर हिंदी भाषी प्रदेशों की हिंदी के प्रति प्रेम और सहयोग को सामने लाना भी रहा।

संध्या सिंह की रिपोर्ट

वर्धा में 'हिंदी आलोचना का इतिहास' विषय पर संगोष्ठी

13 अप्रैल, 2015 को वर्धा संस्कार एवं बहुवचन के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में 'हिंदी आलोचना का इतिहास' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि "हिंदी आलोचना पर बाज़ारवाद का गहरा प्रभाव है"। अवसर पर अनुसंधान अधिकारी एवं युवा आलोचक जीतेंद्र गुप्ता को सम्मानित किया गया। श्री गुप्ता ने 'इतिहास बोध का संघर्ष - संघर्ष का इतिहास बोध' विषय पर एक व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने 20वीं शताब्दी के आरंभिक दौर में भारतीय जनता के बारे में ब्रितानी साम्राज्यवादी इतिहासकारों की गलत व्याख्याओं के इतिहास पर बात करते हुए विस्तारपूर्वक जानकारी दी कि किस प्रकार हिंदी के प्रारंभिक बौद्धिकों ने भारतीय इतिहासबोध को एक शक्ल प्रदान की। व्याख्यान के पश्चात 'हिंदी आलोचना का इतिहास' विषय पर एक संगोष्ठी हुई जिसमें गोरखपुर विश्वविद्यालय से आए मुख्य अतिथि प्रो. सुरेंद्र दुबे ने जीतेंद्र गुप्ता के आलोचकीय साहस की प्रशंसा की और हिंदी आलोचना की आरंभिक प्रवृत्तियों के आधार पर हिंदी प्रदेश में बौद्धिक स्तर पर उपजे साम्राज्यवाद विरोधी माहौल के बारे में बताया। उन्होंने इस बौद्धिक उपलब्धि का श्रेय हिंदी के आरंभिक आलोचकों को दिया। संगोष्ठी में साहित्य विद्यापीठ के प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने हिंदी आलोचना पर बात की। इसके पश्चात प्रो. सूरज पालीवाल, डॉ. रामानुज अस्थाना, युवा कहानीकार मनोज कुमार पांडेय व शोध छात्र संजीव कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. चितरंजन मिश्र ने कहा कि भाषा और विचार का विकास असहमति से होता है। असहमति से ही वातावरण निर्मित होता है। आज की आलोचना तुरंत संस्कृति की आलोचना है। उन्होंने संगोष्ठी में हुए विचार-विमर्श की प्रशंसा की और कहा कि विश्वविद्यालय 'हिंदी आलोचना के इतिहास' पर गोष्ठियों के माध्यम से आगे भी कार्य करेगा। संगोष्ठी का सफ़ल संचालन बहुवचन के संपादक श्री अशोक मिश्र ने किया तथा कथाकार राकेश मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। विश्वविद्यालय के प्रकोष्ठ वर्धा संस्कार के संयोजक श्री राकेश श्रीमाल एवं बहुवचन के संपादक ने संगोष्ठी को क्रियान्वित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षक, छात्र और शोधार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

'भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' द्विदिवसीय संगोष्ठी

10-11 अप्रैल, 2015 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास के प्रांगण में 'भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन' विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उच्च शिक्षा और शोध संस्थान की स्वर्ण जयंती तथा भारतीय साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की प्रायोजित संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में 'साहित्य के विकास में तुलनात्मक अध्ययन और साहित्य का योगदान, चुनौतियाँ व उपलब्धियाँ' के पहलुओं पर साहित्यकारों व प्रबुद्ध चिंतकों द्वारा वैचारिक मंथन हुआ। संगोष्ठी का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रो. पी. आदेश्वर राव, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान के अध्यक्ष प्रो. नारायण राजू व कुलसचिव प्रो. निर्मला एस. मौर्य, विशिष्ट अतिथि श्री वेंकटेश्वर राव तथा डॉ. ऋषभदेव शर्मा द्वारा दीप प्रज्वलन से हुआ।

यूनिवर्सिटी विंग की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस संगोष्ठी का प्रमुख आकर्षण प्रोफ़ेसर पी. आदेश्वर राव और पहले बैच के विद्यार्थी इंद्रराज वैद की उपस्थिति थी। प्रो. आदेश्वर राव ने बताया कि 1964 में इस विंग की शुरुआत के वक्त कैसी परिस्थितियाँ थीं और किस तरह कार्य को आगे बढ़ाया गया। एम. वेंकटेश्वर राव ने कहा कि स्वर्ण जयंती का इस संगोष्ठी के माध्यम से सदुपयोग हुआ है। सभा ने भारत में विशेष अस्तित्व स्थापित किया है। उन्होंने हिंदी की जड़ों को सींचने और इस अभियान को आगे ले जाने की प्रेरणा दी।

बीज वक्तव्य में ऋषभदेव शर्मा ने संगोष्ठी के आशय, उद्देश्य व प्रयोजन पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए सात सूत्रों पर चर्चा की। निर्मला मौर्य ने एक उद्धरण से स्पष्ट किया कि तुलना का तात्पर्य किसी को नीचा दिखाना नहीं वरन इसका उद्देश्य यह है कि सामने वाला इससे कुछ सीखे और कमियों को सुधारे। प्रशासनिक अधिकारी के. दीनबंधु, साहित्यकार बालशौरि रेड्डी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम में पहले प्रोफ़ेसर और पहले बैच के दीक्षार्थी के साथ मंचासीन अतिथियों और साहित्यकारों का सम्मान हुआ। दूसरे सत्र में हिंदी, तेलुगु और तमिल विषयक तुलनात्मक साहित्य पर पत्र वाचन हुआ। मंच संचालन डॉ. नज़ीम और डॉ. विजय पाटिल ने किया।

साभार : राजस्थान पत्रिका.कॉम

डरबन में उम्हलंगा हिंदी विद्या सभा की 14वीं वर्षगांठ व वार्षिक पुरस्कार दिवस

14 जून, 2015 को उम्हलंगा हिंदी विद्या सभा, डरबन ने अपनी 14वीं वर्षगांठ तथा वार्षिक पुरस्कार दिवस मनाया। समारोह का आयोजन सभा के नए मंदिर व सांस्कृतिक भवन के प्रस्तावित साइट पर किया गया था। अवसर पर सभा के अधिकारीगण, सदस्य एवं शुभचिंतक उपस्थित थे। कार्यक्रम प्रात:काल 70 बहु कुंडीय यज्ञ के साथ आरंभ हुआ। यज्ञ सभा की पंडिता तारा सिरकिसुन तथा मॉरिशस से आई अतिथि पंडिता धनवन्ती लोकी, अकादमिक सिद्धांत वाचस्पति के नेतृत्व में संपन्न हुआ। यज्ञ के उपरांत सभा के सदस्यों द्वारा संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए साथ ही हिंदी शिक्षा संघ, दक्षिण अफ्रीका द्वारा आयोजित 2014 की परीक्षाओं में उत्तीर्ण छात्रों को पुरस्कृत किया गया। अवसर पर डरबन के भारतीय कौंसल जनरल श्री राजागोपालन रघुनाथन; हिंदी शिक्षा संघ की अध्यक्षा श्रीमती मालती रामबली; सेवानिवृत्त स्कूल निरीक्षक श्रीमती चन्द्रा शाह तथा युवा व्यवसायी श्री विवेक पटुन्दीन ने वक्तव्य प्रस्तुत किए। सभी ने सभा के कार्यों की प्रशंसा करते हुए भावी योजनाओं के लिए शुभकामनाएँ दीं।

साभार : हिंदी खबर, दक्षिण अफ्रीका

'साहित्य की सामाजिक हैसियत' विचार गोष्ठी

21 मई, 2015 को साहित्यिक संस्था 'सम्भावना' द्वारा विजन स्कूल ऑव मैनेजमेंट चित्तौड़गढ़ में 'साहित्य की सामाजिक हैसियत' विषयक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। विचार गोष्ठी में विषय प्रवर्तन करते हुए डॉ. सत्यनारायण व्यास ने साहित्य और समाज के अन्तर - अनुशासनिक डोर के बारे में बताया तथा प्रमुख शिक्षाविद एवं डाईट के पूर्व प्रधानाचार्य मुन्नालाल डाकोत ने अपने विचार रखते हुए साहित्य की क्षमता के समर्थन में तर्क रखे। साथ-साथ डॉ. कनक जैन ने गोष्ठी का संचालन करते हुए अपने विचार व्यक्त किए। गोष्ठी में अनेक साहित्य प्रेमी उपस्थित थे। अंत में सम्भावना के अध्यक्ष डॉ. के. सी. शर्मा ने सभी साहित्य प्रेमियों का आभार व्यक्त किया।

साभार डॉ. कनक जैन

वाराणसी में आयोजित युवा कवि संगम

9-10 अप्रैल, 2015 को काशी हिंदू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा दो दिवसीय युवा कवि संगम का सफ़ल आयोजन हुआ। समारोह में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के दो शोध-छात्र प्रदीप त्रिपाठी एवं शैलेंद्र कुमार शुक्ल ने अतिथि कवि के रूप में भाग लिया। सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ कवि ज्ञानेंद्रपति ने की जिसमें मुख्य रूप से निलय उपाध्याय, दिनकर कुमार, श्री प्रकाश शुक्ल, राकेश रंजन, प्रदीप त्रिपाठी, बसंत सकरगाये, निशांत, जासिंता केरकेट्टा, अमित मनोज, कुँवर रवींद्र, आत्मा रंजन, सुरेश सेन, अरुणाभ सौरभ, शैलेंद्र कुमार शुक्ल, रामजी तिवारी, अजय पांडेय, कर्मानंद आर्य, निर्मला तोदी, सुधांशु फिरदौश, केशव तिवारी, संतोष चतुर्वेदी, सर्वेश कुमार सिंह, अच्युतानंद मिश्र, श्रीकांत दुबे, अमृत सागर, भावना मिश्र, सोनी पांडेय एवं विजय सिंह आदि शामिल थे। प्रथम दिवस, कविता 'इन दिनों' विषय पर परिचर्चा हुई जिसमें वर्तमान परिदृश्य में कविता की दशा एवं दिशा की पड़ताल करते हुए उसके महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार किया गया तथा द्वितीय दिवस के दो सत्रों में आमंत्रित कवियों द्वारा काव्यपाठ हुआ।

बी. एस. मिरगे की रिपोर्ट

विश्व वात्सल्य मंच एवं कादम्बिनी क्लब के तत्वावधान में परिचर्चा संगोष्ठी

9 मई, 2015 को विश्व वात्सल्य मंच एवं कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद के तत्वावधान में श्रीमती संपत देवी मुरारका कृत "यात्रा क्रम-भाग 3" पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. ऋषभदेव शर्मा ने की तथा डॉ. कविता वाचक्नवी मुख्य अतिथि, प्रो. शुभदा वांजपे एवं विजयलक्ष्मी काबरा सम्माननीय अतिथि, डॉ. मदनदेवी पोकरणा एवं डॉ. अहिल्या मिश्र, पुस्तक समीक्षक तथा कार्यक्रम आयोजक व "यात्रा क्रम-भाग 3" की लेखिका संपत देवी मुरारका मंचासीन थे।

प्रथम सत्र का आरंभ दीप प्रज्वलन, सरस्वती वंदना, अतिथियों को पुष्पगुच्छ भेंटकर तथा डॉ. मिश्र द्वारा उपस्थित सभा के स्वागत द्वारा हुआ। परिचर्चा में सभी ने अपने-अपने शब्दों में साहित्य के उद्देश्य तथा यात्रा वृत्तांत के तत्वों पर प्रकाश डालते हुए पुस्तक की प्रशंसा की। साथ ही प्रसन्न भंडारी-सरोज ने लेखिका का सम्मान किया और संपत देवी मुरारका द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ प्रथम सत्र का समापन हुआ।

द्वितीय सत्र में सुरेश जैन की अध्यक्षता में कवि-गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें सविता सोनी, विजयलक्ष्मी काबरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, पवित्रा अग्रवाल, पवन जैन, पुरुषोत्तम कडेल, डॉ. आलोक शुक्ला, डॉ. कविता वाचक्नवी, सुनीता गुप्ता, संपत देवी मुरारका, डॉ. अहिल्या मिश्र, मीना मूथा, रूबी मिश्रा ने काव्यपाठ किया।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

एक शाम कविता ही कविता के नाम

20 अप्रैल, 2015 को विश्व वात्सल्य मंच, हैदराबाद के तत्वावधान में श्री कृष्ण मुरारका पैलेस, बड़ी चाडवी, हैदराबाद के निवास स्थान पर लंदन से पधारी डॉ. कविता वाचक्नवी के सम्मान में एक काव्य गोष्ठी का सफ़ल आयोजन किया गया। संस्था की अध्यक्षा संपत देवी मुरारका एवं प्रधान सचिव राजेश मुरारका ने संयुक्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि विश्वम्भरा की प्रधान सचिव डॉ. कविता वाचक्नवी के स्वदेश आगमन पर यह सम्मान समारोह रखा गया है। इस अवसर पर संस्था की परामर्शदाता डॉ. अहिल्या मिश्र ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा डॉ. कविता वाचक्नवी मुख्य अतिथि के रूप में व डॉ. ऋषभदेव शर्मा एवं विनीता शर्मा विशिष्ठ अतिथि के रूप में मंचासीन थे। कार्यक्रम का शुभारंभ संपत देवी मुरारका के निराला रचित सरस्वती वंदना की सुमधुर स्वर से तथा उपस्थित अतिथियों के स्वागत से हुआ। डॉ. मिश्र ने स्वागत भाषण में अतिथियों का सरल और सटीक शब्दों में परिचय दिया तथा डॉ. वाचक्नवी के सम्मान में आयोजित 'आज की शाम कविता ही कविता के नाम' कवि गोष्ठी में पधारे सभी रचनाकारों का हार्दिक स्वागत व अभिनन्दन किया। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों को सम्मानित किया गया। सुषमा बैद के सफ़ल संचालन में कवि गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें श्रीमती विजयलक्ष्मी काबरा, विनीता शर्मा, डॉ. ऋषभदेव शर्मा, सुनीता गुप्ता, संपत देवी मुरारका, डॉ. कविता वाचक्नवी ने काव्यपाठ किया व अनीता अग्रवाल, चाँदनी, अर्पणा भी उपस्थित रहीं। डॉ. अहिल्या मिश्र ने अध्यक्षीय काव्य पाठ किया तथा अंत में गीता अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया।

संपत देवी मुरारका की रिपोर्ट

'उपन्यासों के झरोखे से-चित्रा मुद्गल' पुस्तक का विमोचन

नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी के तत्वावधान में सभागार कक्ष 22, कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय में दिग्गज विद्वानों, प्रतिष्ठित विचारक, चिंतक और समालोचकों के कर-कमलों द्वारा डॉ. करुणा शर्मा की 'उपन्यासों के झरोखे से-चित्रा मुद्गल' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। सभागार में उपस्थित सभी अतिथियों ने समारोह को गौरवान्वित किया। पुस्तक की विशेषता को रेखांकित करते हुए प्रतिष्ठित साहित्यकार महेश दर्पण लिखते हैं: ''करुणाजी ने रचनाकार के एक्टिविस्ट और योद्धा रूप को परखते हुए उनके उपन्यासों को ऐसी समीचीन दृष्टि से देखा कि आनेवाले अध्येताओं को उससे नई राह मिल सकेगी।'' इसके अतिरिक्त डॉ. पूरनचंद टंडन 'गहन संवेदना तथा गंभीर-जीवन साधना की अकंपित दीपशिखा' में लिखते हैं:''उपन्यासों का कथ्य एवं विषय वस्तु, उपन्यासों में स्त्री-विमर्श, उपन्यासों का मनोविश्लेषणात्मक विवेचन-विश्लेषण, समाज और जीवन का यथार्थबोध तथा चित्रा मुद्गल के

उपन्यासों का अभिव्यक्ति कौशल, भाषा-सौंदर्य एवं उनके शिल्प की बुनावट आदि का जैसा गंभीर, गहन एवं मूल्यांकनपरक विवेचन इस पुस्तक में किया है, वह दुर्लभ तो है ही, स्तुत्य भी है।'' अत्यंत आकर्षक कलेवर से युक्त 280 पृष्ठों वाली यह पुस्तक 'उपन्यासों के झरोखे से-चित्रा मुद्गल' का प्रकाशन शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स ने किया है।

डॉ. ममता सिंगला की रिपोर्ट

संगीता बहादुर के उपन्यास 'विकराल' का लोकार्पण

6 जून, 2015 को वातायन कविता संस्था और सोआस-लंडन विश्वविद्यालय के खलीली लेक्चर थीएटर में अंतरराष्ट्रीय शिक्षाविद और विख्यात सांस्कृतिक विशेषज्ञ और श्रुति फाउंडेशन व भारतीय कल्याण परिषद की संस्थापक, अध्यक्ष, ज्ञान प्रणालियों और कल्याण विज्ञान की वैश्विक प्रतिपादक, सुश्री श्रुति नादा पोद्दार द्वारा संगीता बहादुर की पुस्तक काल त्रयी द्वितीय, 'विकराल' (मैकमिलन, 2015) का विमोचन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. निखिल कौशिक, कवि, रेडियो-प्रस्तोता और पेशे से नेत्र सर्जन द्वारा ग़ज़ल 'हम आपके ही कहलाते हैं' के सस्वर पाठ से हुआ। उपन्यास की दिलचस्प घटनाओं को संगीता बहादुर के साथ कथा यू.के. के महासचिव तेजिंदर शर्मा द्वारा नाटकीय पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया गया तथा प्रमुख कुचिपुड़ी नर्तकों और कोरिऑग्रैफ़र अरुणिमा कुमार द्वारा 'विकराल' पर आधारित अभिनय-नृत्य की प्रस्तुति हुई जो उन्होंने लेखिका के साथ प्रस्तुत किया। अतिथियों में प्रख्यात लेखक, विद्वान, मीडियाकर्मी, कवि और कलाकार बड़ी संख्या में शामिल थे।

दिव्या माथुर की रिपोर्ट

अंडमान निकोबार की लेखिका डॉ. एन. लक्ष्मी के ग्रंथ का लोकार्पण

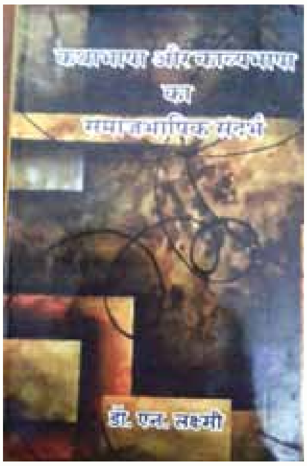

25 मई, 2015 को शाम 4:30 बजे "साहित्य मंथन" के तत्वावधान में पोर्ट ब्लेयर (अंडमान निकोबार द्वीप समूह) की लेखिका डॉ. एन. लक्ष्मी के ग्रंथ 'कथा भाषा और काव्य भाषा का समाजभाषिक संदर्भ' का लोकार्पण दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के खैताबाद स्थित सभाकक्ष में प्रो. ऋषभदेव शर्मा द्वारा किया गया। यह कार्यक्रम कादंबिनी क्लब की अध्यक्षा डॉ. अहिल्या मिश्र तथा दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, आंध्र के सचिव सी. एस. होसगौडर के सान्निध्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित थे: 'मनमीत' के संपादक अमन कुमार त्यागी, शार्प रिपोर्टर के संपादक अरविंद कुमार सिंह, डॉ. अर्पणा दीप्ति, शिवकुमार राजौरिया और के. नागेश्वर राव। जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 'साहित्य मंथन' की संयोजक डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा ने बताया कि 'कथा भाषा और काव्य भाषा का समाजभाषिक संदर्भ' शीर्षक पुस्तक में डॉ. एन. लक्ष्मी ने समाज भाषा विज्ञान और शैली विज्ञान के सिद्धांतों का समन्वय करते हुए प्रेमचंद से लेकर संजीव तक के उपन्यासों व कहानियों तथा मैथिलीशरण गुप्त से लेकर जितेंद्र श्रीवास्तव तक की कविताओं की भाषा शैली के सामाजिक संदर्भ का पहली बार गहन विश्लेषण किया है। उल्लेखनीय है कि यह पुस्तक प्रसिद्ध समाज शैली वैज्ञानिक प्रो. दिलीप सिंह को समर्पित है।

साभार : हैदराबाद से ब्लॉग

गहरी संवेदना और सहज अभिव्यक्ति की कृति 'शब्द-नि:शब्द'

9 जून, 2015 को नर्मदा विश्वनाथ प्रकाशन द्वारा प्रीतमलाल दुआ सभागार में डॉ. अर्चना जोशी के काव्य संग्रह 'शब्द-नि:शब्द' के लोकार्पण तथा चर्चा गोष्ठी समारोह का सफ़ल आयोजन किया गया। स्वागत भाषण नर्मदा विश्वनाथ प्रकाशन के संयोजक व समाजसेवी बालकृष्ण जोशी ने दिया तथा संस्था की ओर से अतिथियों का स्वागत देवेश वर्मा, डॉ. हेमलता दिखित, बलराम शर्मा एवं मधुकर जी ने किया। शब्द-नि:शब्द की कविताओं में करुणा, संवेदना, सूफ़ियाना अंदाज़ तथा आधुनिक बोध की चर्चा करते हुए कहा गया कि डॉ. अर्चना जोशी में रचनाशीलता की अनंत संभावनाएँ हैं। इस अवसर पर डॉ. अर्चना जोशी ने अपनी रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए 5 कविताओं का वाचन किया। कवयित्री डॉ. साधना देवेश द्वारा मंच संचालन तथा हृदयेश भारद्वाज द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

बालकृष्ण जोशी की रिपोर्ट

'अँखियाँ पानी पानी' का लोकार्पण

29 जून, 2015 को अखिल भारतीय महिला रचनाकार समिति के तत्वावधान में निराला सभागार में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाकवि निराला के पौत्र श्री अखिलेश त्रिपाठी द्वारा वाणी वंदना से हुआ। तत्पश्चात श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा की कालजयी पुस्तक "अँखियाँ पानी पानी" एवं उस पर डॉ. पदमा सिंह के निर्देशन में सुश्री नलिनी शर्मा द्वारा किए गए शोध प्रबंध 'अँखियाँ पानी पानी में प्रेम और दर्शन'का लोकार्पण हुआ। पूर्व शिक्षा मंत्री एवं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफ़ेसर डॉ. नरेन्द्र कुमार सिंह गौर ने कहा कि "अँखियाँ पानी पानी" हिंदी साहित्य जगत में भक्ति की इकलौती कृति है। उन्होंने श्रीमती विजयलक्ष्मी विभा को अद्वितीय रचनाकार बताया और कहा कि उन्होंने अपनी लेखनी से समाज के हर वर्ग को राह दिखाने का प्रयास किया है। श्री गौर ने कहा कि साहित्य समाज का सही दर्पण है जिसे उन्होंने सही स्वरूप में पेश किया है। लोकार्पण के पश्चात श्रीमती विभा के साथ-साथ देश के विभिन्न अंचलों से आई हुई महिला रचनाकारों को सम्मानित किया गया। कवि गोष्ठी तथा श्रीमती कृष्णा साही द्वारा आभार ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ।

साभार : युवा भास्कर ब्लॉग

संगीता बाजपेयी के कहानी संग्रह 'छू लें आसमान' का लोकार्पण

28 मई, 2015 को जुहू में संगीता बाजपेयी के कहानी संग्रह 'छू लें आसमान' का लोकार्पण अभिनेत्री और सांसद हेमा मालिनी द्वारा संपन्न हुआ। यह संगीता बाजपेयी का दूसरा कहानी संग्रह है। अभिनेत्री हेमा मालिनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'नारी हमेशा से शक्ति का प्रतीक रही है। चाहे वो दुर्गा हो, काली हो या सरस्वती, मैत्री हो या गार्गी, उसने हर मौके पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर दुष्टों का संहार किया। आज हर क्षेत्र में नारी अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही है खासतौर से लेखन क्षेत्र में।'

इस मौके पर 'सेव गर्ल चाइल्ड' पर राहुल सेठ की बनाई फ़िल्म भी दिखाई गई। नारी सशक्तीकरण पर आयोजित संगोष्ठी में सुप्रसिद्ध फ़िल्म लेखिका डॉ. अचला नागर, राजम पिल्लै, डॉ. कामिनी खन्ना, सुप्रसिद्ध तबला-वादक पंडिता अनुराधा पाल और मितुल प्रदीप ने भी अपने जीवन संघर्ष पर प्रकाश डालते हुए नारी शक्ति पर अपने विचार प्रकट किए। अंजन श्रीवास्तव, विष्णु शर्मा, चैतन्य पाडुकोण, राजकुमार बड़जात्या जैसी हस्तियों ने भी संगीता को बधाई दी। आशीर्वाद संस्था के चेयरमैन बृजमोहन अग्रवाल एवं निदेशक डॉ. उमाकांत बाजपेयी ने अतिथियों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन नीता बाजपेयी ने किया।

साभार : हिन्दी मीडिया.इन

'राजकमल चौधरी रचनावली' का लोकार्पण

19 जून, 2015 को नई दिल्ली के साहित्य अकादमी सभागार में 'राजकमल चौधरी रचनावली' का लोकार्पण प्रसिद्ध आलोचक-द्वय नामवर सिंह, मैनेजर पांडेय और विख्यात इतिहासकार तथा राजकमल चौधरी के अंतरंग मित्र डी. एन. झा ने किया। राजकमल प्रकाशन समूह द्वारा आयोजित इस लोकार्पण कार्यक्रम में नामवर सिंह ने कहा :"राजकमल चौधरी की रचनाओं ने पीढ़ियों को प्रेरित किया और उनकी रचनावली का प्रकाशन हिंदी जगत और हिंदी साहित्य को आगे बढ़ाने में बहुमूल्य योगदान देगा।" वहीं मैनेजर पांडेय ने राजकमल चौधरी की रचना संसार को रेखांकित करते हुए कहा कि राजकमल चौधरी विद्रोही व रूढ़िभंजक व्यक्ति थे तथा उनका यह विद्रोह उनके साहित्य में भी प्रकट होता है। वरिष्ठ लेखिका मृदुला गर्ग ने अपनी बात रखते हुए कहा :"राजकमल चौधरी ने मात्र 38 वर्ष की आयु में उपन्यास, कहानी और कविता में विपुल कृतियाँ रचीं और हर कृति अपने समय से आगे विशिष्ट और मौलिक थीं।" इस कार्यक्रम में गंगेश गुंजन, ललितेश मिश्र, अभिमन्यु खां, अन्विता अब्बी, सौमित्र मोहन, मंगलेश डबराल, मदन कश्यप, आलोक श्रीवास्तव, गीता श्री, प्रभात रंजन, संदीप चटर्जी, अल्पना मिश्र, देवेंद्र राज अंकुर, सुरेश सलिल, रवींद्र त्रिपाठी, अनिल पांडेय, संजीव सिंहा व राजकमल चौधरी के कई ग्रामीण सहित सैकड़ों लोग उपस्थित हुए। धन्यवाद ज्ञापन राजकमल समूह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी आमोद महेश्वरी ने किया।

साभार : हिन्दी मीडिया.इन

मध्य प्रदेश लेखक संघ, भोपाल की प्रादेशिक गीत गोष्ठी

24 मई, 2015 को मध्य प्रदेश लेखक संघ, भोपाल की प्रादेशिक गीत गोष्ठी का आयोजन वरिष्ठ साहित्यकार बटुक चतुर्वेदी के मुख्य आतिथ्य, गीतकार यतीन्द्रनाथ राही के विशिष्ट आतिथ्य एवं संस्था के अध्यक्ष डॉ. रामवल्लभ आचार्य की अध्यक्षता में हिंदी भवन के नरेश मेहता गोष्ठी कक्ष में किया गया। इस अवसर पर भोपाल के युवा गीतकार धर्मेन्द्र सिंह सोलंकी एवं दतिया के युवा गीतकार बृजेश द्विवेदी को रामपूजन मलिक स्मृति नवोदित गीतकार सम्मान से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त राधाकृष्ण बावनिया, अरुण अपेक्षित, मनोज जैन 'मधुर' ने रचना पाठ किया। वहीं विशिष्ट अतिथि यतीन्द्र नाथ राही ने पढ़े गए गीतों पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी दी। इस अवसर पर संस्था के पदाधिकारी सर्वश्री प्रभुदयाल मिश्र, पंवार राजस्थानी, अशोक निर्मल, डॉ. प्रीति प्रवीण खरे, महेश सक्सेना, युगेश शर्मा, अरविन्द चतुर्वेदी, अनिरुद्ध सिंह सेंगर सहित अनेक साहित्यकार उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन गीतकार मनोज जैन 'मधुर' ने किया।

साभार : अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका–मासिक साहित्य क्रान्ति

गोइन्का पुरस्कार व सम्मान समारोह हैदराबाद में संपन्न

11 अप्रैल, 2015 को हैदराबाद के एन.टी.आर. कलामंदिरम् में कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा आयोजित वरिष्ठ तेलुगु भाषी हिंदी साहित्यकारों एवं हिंदी पत्रकारों के सम्मानार्थ समारोह में कमला गोइन्का फ़ाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्री श्यामसुन्दर गोइन्का ने पुरस्कृत साहित्यकारों और पत्रकारों के योगदान को सराहा व संस्था का परिचय दिया।

वरिष्ठ हिंदी-तेलुगु अनुसृजक के सम्मानार्थ घोषित ***गीतादेवी गोइन्का हिंदी–तेलुगु अनुवाद पुरस्कार** 2015* डॉ. आर. सुमनलता को प्रख्यात समाजशास्त्री पुरुषोत्तम अग्रवाल की विख्यात कबीर-कथा 'अकथ कहानी प्रेम की' की उनके द्वारा अनुसृजित तेलुगु कथा 'विनिपंचनि कथा विनिपिंचु' तथा उनके द्वारा हिंदी व तेलुगु साहित्य के प्रति किए गए समग्र योगदान के लिए दिया गया।

आंध्र प्रदेश के वरिष्ठ हिंदी साहित्यकारों के सम्मान में घोषित ***भाभीश्री रमादेवी गोइन्का हिंदी साहित्य सम्मान** 2015* से वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. सुवास कुमार को उनके साहित्यिक योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

साथ ही आंध्र प्रदेश के हिंदी पत्रकारिता जगत के वरिष्ठ पत्रकारों के सम्मानार्थ घोषित 'श्री मुनींद्र पत्रकारिता सम्मान' से हैदराबाद से प्रकाशित प्रमुख हिंदी दैनिक 'मिलाप' से करीबी से जुड़े श्री दिवाकर पांडेय जी को सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. ए. के. पुरोहित (प्रख्यात स्नायुविज्ञान निष्णात) ने सम्मानमूर्ती साहित्यकारों का अभिनंदन किया और साहित्यिक गतिविधियों के लिए न्यास को बधाई दी। समारोह अध्यक्ष डॉ. एम. वेंकटेश्वर ने कमला गोइन्का फाउण्डेशन द्वारा साहित्यकारों, पत्रकारों के सम्मानार्थ चलाए जा रहे इस मुहिम को व हिंदी साहित्य के प्रति किए जा रहे कार्यों की भरपूर सराहना की और श्री गोइन्का को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन श्री सुमित मिश्रा तथा ललिता गोइन्का ने किया। अंत में श्री ओमप्रकाश गोइन्का ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर प्रादेशिक पुरस्कार समिति के सदस्य डॉ. राधेश्याम शुक्ल, श्री रवि श्रीवास्तव, श्री वेणुगोपाल भट्टड़ तथा डॉ. एम. रंगय्या सहित हैदराबाद के अनेक गणमान्य साहित्य-प्रेमी व्यक्ति मौजूद थे।

साभार : कमला गोइन्का फाउण्डेशन

साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति की बैठक संपन्न

13 अप्रैल, 2015 को डॉ. अहिल्या मिश्र के निवास स्थान राजसदन, वेंगलराव नगर, हैदराबाद में साहित्य गरिमा पुरस्कार समिति की बैठक संपन्न हुई। संस्थापक अध्यक्ष डॉ. अहिल्या मिश्र तथा महासचिव डॉ. रमा द्विवेदी ने संयुक्त रूप से जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि प्रो. ऋषभदेव शर्मा (प्रो. एवं विभागाध्यक्ष, उच्च शिक्षा शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद) ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। डॉ. जी. नीरजा एवं डॉ. पूर्णिमा शर्मा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। गोष्ठी में सातवाँ साहित्य गरिमा पुरस्कार-2014 प्रदान करने संबंधी निर्णय लिये गये। अगला साहित्य गरिमा पुरस्कार 'कथ्येतर' गद्य विधा के लिए प्रदान करने का निर्णय लिया गया। इस अवसर पर श्रीमती संपत देवी मुरारका (उपाध्यक्ष), डॉ. सीता मिश्र (सह-कार्यदर्शी),श्रीमती आशा मिश्र (संयुक्त मंत्री) तथा श्रीमती सरिता सुराणा जैन (कार्यकारिणी सदस्य) उपस्थित थीं।

साभार : हैदराबाद से ब्लॉग

लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में वर्तिका नन्दा और विमला मेहरा की 'तिनका तिनका तिहाड़'

वर्तिका नन्दा और विमला मेहरा की किताब 'तिनका तिनका तिहाड़' को लिम्का बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया है। 2013 में राजकमल प्रकाशन से हिंदी और अंग्रेज़ी में छपी यह किताब शुरु से ही चर्चा में रही है। यह दुनिया में एक अनूठा प्रयास रहा जिसमें तिहाड़ जेल की महिला कारागार नंबर 6 में कैद महिला कैदियों को कविता लेखन के लिए प्रेरित किया गया और बाद में चार महिला कैदियों रमा चौहान, सीमा रघुवंशी, रिया शर्मा और आरती की कविताओं का संकलन छापा गया। इस किताब में छपी प्राय: सभी रंगीन तसवीरें कैदियों ने खुद ली हैं। एक विशेष अनुमति के बाद उन्हें कुछ घंटों के लिए एक कैमरा दिया गया था जिससे वे अपनी ज़िंदगी की तसवीरें खुद लें। इस किताब को अलग ढंग से छापा गया है। किताब को खोलने पर शब्द नहीं, सिर्फ़ तसवीरें दिखाई देती हैं मानो यह तसवीरों की किताब है। दरअसल सारे पन्ने एक-दूसरे के साथ जोड़े गए हैं। उन्हें अलग करने पर ही मिलती है-कविता। इस किताब और गाने के साथ लगातार कई प्रयोग किए गए हैं। वर्तिका नन्दा और विमला मेहरा ने पत्रकारिता और जनसंचार के विविध माध्यमों से अपराध की तरफ़ ध्यान दिलाने की कोशिश की है। वर्तिका नन्दा और विमला मेहरा का लिखा गाना- 'तिनका तिनका तिहाड़'... तिहाड़ जेल की पहचान बन चुकी है।

साभार : मीडियाखबर

महात्मा गांधी द्विवार्षिक हिंदी लेखन पुरस्कार

20 अप्रैल, 2015 को राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग द्वारा सी.डी. देशमुख सभागार, नई दिल्ली में आयोजित भव्य समारोह में लेखक श्री राधेश्याम भारतीय तथा युवा साहित्यकार डॉ. संगीता सक्सेना को उनकी पुस्तक 'कत्ल कच्ची कोंपलों का' के लिए 'महात्मा गांधी द्विवार्षिक हिंदी लेखन पुरस्कार (2010-11)' से पुरस्कृत व सम्मानित किया गया। न्यायमूर्ति श्री के.जी. बालाकृष्णन, अध्यक्ष राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के कर-कमलों द्वारा लेखकों को पुरस्कार के चेक, स्वर्णिम प्रशस्ति-पत्र, प्रमाण-पत्र, शॉल इत्यादि से सम्मानित किया गया। समारोह में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित चिंतक, प्रो. अरुण कमल, श्री शरदचंद्र सिंहा, तथा राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के संयुक्त सचिव जे.एस.कोचर ने पुस्तक को अपने उद्बोधनों में सराहा।

श्री राधेश्याम भारतीय ने अपने लेखकीय उद्बोधन में इस पुस्तक के लेखन का उद्देश्य बताया तथा कन्याओं की कम होती हुई जनसंख्या के बारे में चिंता व्यक्त की।

डॉ. संगीता सक्सेना की रिपोर्ट

पंचम अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन एवं परिकल्पना सम्मान समारोह

23 मई से 27 मई, 2015 तक ब्लॉगरों को रचनात्मक मंच प्रदान करने के उद्देश्य से विगत पाँच वर्षों से कार्यरत लखनऊ की प्रमुख सामाजिक-सांस्कृतिक और साहित्यिक संस्था परिकल्पना द्वारा पाँच दिवसीय पंचम अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन एवं परिकल्पना सम्मान समारोह श्री लंका की राजधानी कोलम्बो तथा सांस्कृतिक राजधानी कैंडी एवं निगम्बो में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुआ। समारोह का उद्घाटन श्री लंका के वरिष्ठ रंगकर्मी डान सोमरत्ने विथाना ने किया। उ.प्र. शासन के पूर्व नगर विकास मंत्री श्री नकुल दुबे (मुख्य अतिथि), नदेशक भारतीय डाक सेवा राजस्थान पश्चिमी क्षेत्र (जोधपुर) के कृष्ण कुमार यादव तथा उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सुनील कुलकर्णी (विशिष्ट अतिथि) ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस सम्मेलन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, असम, दिल्ली, हरियाणा समेत उत्तर प्रदेश के कई ब्लॉगरों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संयुक्त रूप से डॉ. राम बहादुर मिश्र और सुनीता प्रेम यादव ने किया। अंत में कार्यक्रम के संयोजक रवीन्द्र प्रभात ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

साभार : परिकल्पना कोश ब्लॉग

नन्ही ब्लॉगर अक्षिता को परिकल्पना कनिष्ठ सार्क ब्लॉगर सम्मान

8 वर्षीय नन्ही ब्लॉगर अक्षिता यादव (पाखी) को 25 मई, 2015 को श्री लंका में आयोजित पंचम अंतरराष्ट्रीय ब्लॉगर सम्मेलन में ***परिकल्पना कनिष्ठ सार्क ब्लॉगर सम्मान*** से सम्मानित किया गया। यह सम्मान अक्षिता को श्री लंका के वरिष्ठ नाट्यकर्मी डॉ. सोमरथ्न विथाना एवं पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री नकुल दूबे द्वारा प्रदान किया गया।

अक्षिता भारत की सबसे कम उम्र की राष्ट्रीय बाल पुरस्कार विजेता भी है। अक्षिता के बनाये चित्रों और गतिविधियों को ब्लॉग के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत करने हेतु उसके माता-पिता ने 24 जून 2009 को "पाखी की दुनिया" नाम से अक्षिता का ब्लॉग बनाया। अक्षिता का यह ब्लॉग उसकी सोच और कल्पना का मूर्त रूप है। अक्षिता के माता-पिता उसके द्वारा कहे गये शब्दों, उसकी कल्पना व सोच को शब्दों का रूप देकर इस ब्लॉग को मेंटेन करते हैं। देखते ही देखते करीब एक लाख से अधिक हिंदी ब्लॉगों में इस ब्लॉग की रेटिंग बढ़ती गई और आज इस ब्लॉग पर 415 से भी ज़्यादा पोस्ट प्रकाशित हो चुकी हैं और 275 से ज़्यादा लोग इसका अनुसरण करते हैं। इस ब्लॉग पर प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं और 100 से अधिक देशों में इसे देखा-पढ़ा जाता है।

साभार : पाखी की दुनिया ब्लॉगस्पॉट

श्रद्धांजलि

साहित्यकार कैलाश वाजपेयी का निधन

1 अप्रैल, 2015 को प्रसिद्ध साहित्यकार कैलाश वाजपेयी का 81 वर्ष की आयु में निधन हो गया। भारतीय संस्कृति के मर्मज्ञ और कवि रूप में आपकी ख्याति अधिक थी।

लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएचडी करने के बाद आपने अध्यापन से अपना करियर आरंभ किया था। आपने दिल्ली दूरदर्शन के लिए कबीर, हरिदास स्वामी, सूरदास, जे कृष्णामूर्ति, रामकृष्ण परमहंस और बुद्ध के जीवन-दर्शन पर फ़िल्में भी बनाईं। आप लम्बे समय तक दूरदर्शन की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे हैं। आप 'अमर उजाला' के लिए कॉलम भी लिखते थे।

1995 में आपको हिंदी अकादमी सम्मान, 2000 में एस.एस. मिलेनियम अवॉर्ड तथा 2002 में व्यास सम्मान से सम्मानित किया गया। 2005 में आपको ह्यूमन केयर ट्रस्ट अवॉर्ड तथा 2008 में अक्षरम् का विश्व हिंदी साहित्य शिखर सम्मान भी प्राप्त हुआ। 2009 में आपको कविता संग्रह 'हवा में हस्ताक्षर' के लिए साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित किया गया।

आपकी प्रमुख कृतियों में 'संक्रांत', 'देहात से हटकर', 'तीसरा अंधेरा', 'सूफीनामा', 'भविष्य घट रहा है', 'हवा में हस्ताक्षर', 'शब्द संसार', 'चुनी हुई कविताएँ 2004', 'भीतर भी ईश्वर 2008' आदि हैं। स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित नाटक 'युवा संन्यासी' आपका प्रसिद्ध नाटक है।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से श्री कैलाश वाजपेयी को हार्दिक श्रद्धांजलि।

साभार : हिन्दी मीडिया.इन

प्रधान संपादक

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल

सहायक संपादक

सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी

संपादन सहयोग

श्रीमती विजया सरजु, सुश्री चित्रलेखा रामदोयाल, श्रीमती उषा राम, सुश्री त्रिशिला सोमर, सुश्री दीया लक्ष्मी बंधन

***

विश्व हिंदी सचिवालय

स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड 74427, मॉरीशस

World Hindi Secretariat

Swift Lane, Forest Side 74427, Mauritius

फ़ोन/Phone: (230) 676 1196 * फ़ैक्स/Fax: (230) 676 1224

ईमेल/Email: info@vishwahindi.com

वेबसाइट/Website: www.vishwahindi.com

***

Printed by

BAHADOOR PRINTING LTD.

Avenue St. Vincent de Paul-Pailles

Tel: (230) 2081317

भारत में हिंदी में भी बुक कर सकेंगे इ-टिकट

भारतीय रेलवे खानपान एवं पर्यटन निगम (इंडियन रेलवे केटरिंग एंड टुरिज़्म कॉर्पोरेशन) की वेबसाइट पर अब हिंदी में भी इ-टिकिटिंग की सुविधा सुलभ हो गई है। पूर्व में आई.आर. सी.टी.सी. की वेबसाइट हिंदी में न होने के कारण लोगों को इ-टिकट बुक कराने में परेशानी होती थी। इसके लिए या तो उन्हें किसी की मदद लेनी पड़ती थी या फिर टिकट एजेंट के पास जाना पड़ता था लेकिन अब वे बिना किसी सहायता के स्वयं अपना टिकट बुक करा सकते हैं। अंग्रेज़ी से अनजान यात्री भी हिंदी भाषा में ऑनलाइन इ-टिकट बुक करा सकते हैं। यात्रियों को वेबसाइट www.irctc.co.in पर लॉग इन करना होगा। इसके बाद टिकट बुक करते समय बुक करने का विकल्प आएगा। इस विकल्प पर क्लिक करते ही स्वत: हिंदी में लिखने की सुविधा मिलेगी, जहाँ से यात्री आसानी से टिकट बुक करा सकेंगे।

साभार : नई दुनिया जागरण.कॉम

चीन में भी हिंदी और हिंदी वालों का जलवा

अब चीन में कई विश्वविद्यालयों में हिंदी की कक्षाएँ शुरु हो गई हैं। सिर्फ़ बीजिंग में ही नहीं वरन पीकिंग यूनिवर्सिटी के अलावा विदेशी भाषा अध्ययन विश्वविद्यालय तथा कम्युनिकेशन विश्वविद्यालय में भी अब हिंदी की पढ़ाई हो रही है। पीकिंग विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई के अतिरिक्त अनुसंधान का काम भी होता है। यहाँ हिंदी के अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का चीनी में अनुवाद हो चुका है जैसे रामचरितमानस, महाभारत आदि। यह अनुवाद कार्य विश्वविद्यालय के अध्यापक द्वारा किया गया जिसके लिए उन्हें भारतीय राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित भी किया गया है। इस के अतिरिक्त यहाँ के अध्यापकों ने बृहद् हिंदी-चीनी और चीनी-हिंदी शब्दकोश भी तैयार किया है जो चीन में हिंदी पढ़ने वाले छात्रों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। प्रेमचंद, इलाचंद्र जोशी, रवींद्र ठाकुर, आदि अनेक रचनाकारों की रचनाओं का भी चीनी में अनुवाद हो चुका है। और इस समय पीकिंग विश्वविद्यालय में हिंदी की अन्य रचनाओं का अनुवाद कार्य भी जारी है।

चीनी हिंदी रेडियो की रिपोर्ट

ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश में शामिल हुए हिंदी के शब्द

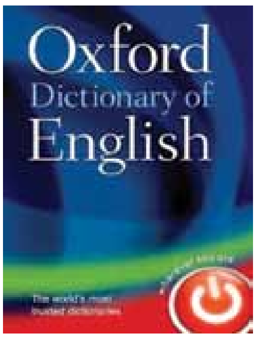

हिंदी भाषा के कुछ ऐसे शब्दों को जो 1845 से अंग्रेज़ी भाषा में प्रयोग किए जा रहे हैं, उन्हें अब प्रसिद्ध ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश में शामिल कर लिया गया है। इन शब्दों का प्रयोग अंग्रेज़ी भाषा में लगातार बढ़ता जा रहा है जिसके कारण इन्हें शब्दकोश में शामिल करने का फ़ैसला लिया गया। ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश की सलाहकार संपादक डॉक्टर डानिका सालजर का कहना है कि "भाषा को लेकर बड़े स्तर पर किए गए शोध के बाद पता लगा कि हिंदी के इन शब्दों का अंग्रेज़ी में खूब प्रयोग किया जाता है व इसका अपना ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भाषाई महत्व है।"

साभार : हिन्दी मीडिया.इन

बाल भारती की वेबसाइट कविता-कहानियाँ भी सुनाएगी

बाल भारती की वेबसाइट पर जल्द ही बोलती हुई पुस्तकें ऑनलाइन की जाएँगी। इनमें गद्य और पद्य पठन के तरीके का ऑडियो उपलब्ध होगा। यानी यह पुस्तकें बच्चों को खुद बताएँगी कि उन्हें कैसे पढ़ना है। बाल भारती की यह योजना है कि पुस्तकों को पूर्ण रूप से ऑनलाइन करने के साथ ही टॉकिंग बुक्स उपलब्ध कराई जाए। शैक्षणिक सत्र 2015-16 में पाँचवी कक्षा के पाठ्यक्रम में बदलाव भी किया गया है। इसके साथ ही बाल भारती की वेबसाइट का नाम www.balbharti.in से बदलकर ebharti कर दिया गया है। बालभारती की इस योजना का फ़ायदा स्कूली विद्यार्थियों के साथ ही बड़े लोगों को भी मिलेगा। बड़े लोग भी किताबों के माध्यम से बचपन की यादें ताज़ा कर सकेंगे। बाल भारती के निदेशक चंद्रमणि बोरकर ने बताया कि बाल भारती की योजना ऑनलाइन टॉकिंग बुक्स उपलब्ध कराने की है। उन्होंने बताया कि इसका उद्देश्य यह है कि बड़े होने के साथ ही पुरानी कविताओं व गद्यों के पठन का तरीका हम भूल जाते हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा और वे टॉकिंग बुक्स की सहायता से उन्हें पढ़ने का फिर अभ्यास कर सकेंगे।

साभार: हिंदी मीडिया.इन

वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में 'हिंदी व्याकरण जाँचक' का प्रदर्शन

21 अप्रैल, 2015 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. धनजी प्रसाद द्वारा 'हिंदी व्याकरण जाँचक' का विकास किया गया। इस सॉफ़्टवेयर को 'आचार्य' नाम दिया गया तथा इसका प्रदर्शन विश्वविद्यालय के भाषा विद्यापीठ में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की उपस्थिति में हुआ। प्रस्तुतीकरण में डॉ. धनजी प्रसाद ने बताया कि यह एक नियम आधारित सॉफ़्टवेयर है जिसमें 50 हज़ार शब्दों के डाटाबेस का प्रयोग किया गया है साथ-साथ यह वाक्य और पदबंध दोनों ही स्तरों पर कार्य करता है और व्याकरणिक त्रुटियों को लाल रंग का और सही प्रयोगों को हरे रंग का कर देता है। इसके लिए वाक्य स्तर के 56 और पदबंध स्तर के 28 नियम दिए गए हैं। इस प्रस्तुतीकरण में प्रो. उमाशंकर उपाध्याय, श्री जगदीप सिंह दांगी, डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय, डॉ. अशोकनाथ त्रिपाठी, डॉ. रामानुज अस्थाना, डॉ. अनिल कुमार दुबे, डॉ. एच.ए. हुनगुंद, डॉ. उमेश सिंह सहित विभिन्न विभागों के अध्यापक, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित थे। प्रस्तुतीकरण के पश्चात कुलपति महोदय तथा उपस्थित प्राध्यापकों द्वारा सॉफ़्टवेयर को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु अनेक बहुमूल्य सुझाव दिए गए।

साभार : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

संयुक्य अरब अमीरात में हिंदी में ड्राइविंग परिक्षा

संयुक्त अरब अमीरात में अब ड्राइविंग के लिए दिए जानेवाला थ्योरी टेस्ट और इसके लिए होनेवाले लेक्चर्स में हिंदी भाषा का विकल्प भी दिया जाएगा। वस्तुत: यू.ए.इ. रोड ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी सिर्फ़ इंग्लिश, उर्दू और अरबी में टेस्ट कंडक्ट करता है। परंतु सरकार ने सितंबर 2015 से ड्राइविंग टेस्ट के लिए भारतीय भाषाओं में हिंदी के साथ-साथ मलयालम, तमिल और बंगाली तथा विदेशी भाषाओं में चीनी, रशियन और पर्शियन को टेस्ट की भाषाओं में शामिल करने की अनुमति दी है। दुबई के ड्राइविंग स्कूलों ने भी सरकार के इस फैसले का स्वागत किया है।

साभार : हिन्दी मीडिया.इन